Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UGC - NET

NATIONAL TESTING AGENCY

पेपर - 1

भाग – 1

शिक्षण और शोध अभिवृत्ति, पठित गद्यांश एवं संचार

SIERRA INNOVATIONS

UGC NET PAPER – 1

क्र.स.	अध्याय	पृ.स.
	UNIT – I शिक्षण अभिवृति	
1.	1. शिक्षण	1
	2. शिक्षार्थियों की विशेषताएं	11
	3. शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक	17
	4. उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण के तरीके	22
	5. शिक्षण सहायता प्रणाली (शिक्षण सहायक)	30
	6. मूल्यांकन प्रणाली	38
	7. अभ्यास प्रश्न	60
	UNIT – II शोध अभिवृत्ति/अनुसंधान योग्यता	
2.	1. परिचय	71
	2. अनुसंधान के तरीके	80
	3. अनुसंधान के चरण	92
	4. अनुसंधान नैतिकता	102
	5. थीसिस लेखन	105
	6. अनुसंधान में आईसीटी का अनुप्रयोग	110
	7. अभ्यास प्रश्न	114
	UNIT – III बोध	
3.	1. बोध	120
	UNIT – IV संचार	
4.	1. परिचय	131
	2. प्रभावी संचार	145
	3. प्रभावी संचार के लिए बाधाएं	150
	4. मास मीडिया और समाज	155
	5. अभ्यास प्रश्न	161

1 Unit

शिक्षण अभिवृत्ति

अध्याय 1 शिक्षण

पिछले वर्ष के प्रश्न

प्रश्न 1: ऐसा कौन सा शिक्षण स्तर है, जिसमें शिक्षक की भूमिका अधिक सक्रिय होती है, बजाय इसके कि वह छात्रों के साथ संवादात्मक भूमिका निभाए? (2020)

(A) स्मृति स्तर (B) समझ स्तर

(C) चिंतनशील स्तर (D) स्वायत्त विकास स्तर

प्रश्न 2: नीचे दिए गए दो कथन हैं: (2020)

कथन I: संवादात्मक और मल्टीमीडिया प्रणालियाँ शिक्षण और सीखने की एक नई संस्कृति प्रदान करती हैं।
कथन II: आभासी कक्षाएँ छात्रों को संवेदनहीन मानवीय पात्रों में बदल देती हैं।
ऊपर दिए गए कथनों के आधार पर, निम्न विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

प्रश्न 3: अधिगम की विशेषताएँ निम्नलिखित में से कौनसी हैं? (2023)

a. अधिगम, व्यवहार में अस्थायी परिवर्तन है
b.अधिगम तारुण्य (प्यूबर्टी) तक समाप्त हो जाता है
c.अधिगम सक्रिय एव सृजनात्मक होता है
d.अधिगम लक्ष्य-निर्देशित होता है
e. अधिगम समायोजन द्वारा प्रेरित होता है
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(A) केवल c, d और e (B) केवल a, c और e

(B) केवल b और d (D) केवल a, b, c और e

प्रश्न 4. ब्लूम के शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण के अनुसार, संज्ञानात्मक क्षेत्र की श्रेणियां निम्नलिखित में से कौनसी हैं? (2023)

a. प्राप्त करना b. मूल्यांकन करना

c. अनुप्रयोग d. ज्ञान

e. संगठन
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(A) केवल c और d (B) केवल a, b, d और e

(C) केवल c और e (D) केवल a, b और c

विश्लेषण:

शिक्षण योग्यता पर आधारित यह अध्याय **UGC NET** और **SET** परीक्षाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्याय में महारत हासिल करने से इकाई के मूल सिद्धांतों को स्पष्ट करने में मदद मिलती है, क्योंकि इसमें शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाने वाली आवश्यक विशेषताओं और आवश्यकताओं को शामिल किया गया है। यह उन्नत शिक्षण योग्यता अवधारणाओं को समझने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। पिछले वर्षों के आधार पर , यह स्पष्ट है कि इस अध्याय से जुड़े प्रश्न अक्सर **वैचारिक और प्रत्यक्ष दोनों होते हैं,** इसलिए, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण बनाते हैं।

शिक्षण परिभाषाएँ

शिक्षण एक व्यक्ति की ऐसी क्रियाएं हैं, जो दूसरों को उनके विकास और वृद्धि के सभी पहलुओं में उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करने का प्रयास करती हैं। शिक्षण का परिणाम तब होगा जब शिक्षक किसी गतिविधि में इस उद्देश्य से शामिल हो कि छात्र इसके परिणामस्वरूप कुछ सीखेंगे।

शिक्षण एक ऐसा कार्य है जो ज्ञान और कौशल को प्रभावी ढंग से स्थानांतरित करने से संबंधित है। यह छात्रों के विचारों और अवधारणाओं को सीखने के तरीकों को सीमित या विस्तारित कर सकता है।

शिक्षण को **'सीखने की सुविधा'** के रूप में परिभाषित किया गया है या दूसरे शब्दों में, शिक्षण का मुख्य उद्देश्य सीखने की सुविधा प्रदान करना है।

- **स्वामी विवेकानंद** ने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है कि "शिक्षा मनुष्य के भीतर पहले से ही मौजूद पूर्णता को प्रकट करने का माध्यम है।"स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "मैं हूं" की भावना को सेवा कार्यों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।
  उन्होंने यह भी कहा कि "शिक्षा को जीवन-निर्माण, मनुष्य-निर्माण, चरित्र-निर्माण के विचारों को आत्मसात करना चाहिए"।
- **स्वामी विवेकानंद ने कहा**: "वह शिक्षा जो आम लोगों को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती**,** जो चरित्र की मजबूती**,** परोपकार की भावना और शेर के समान साहस पैदा नहीं करती – क्या वह शिक्षा कहलाने के योग्य है**?"**
- **अरस्तु** ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा: "शिक्षा का उद्देश्य एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना है।"
- **हेनरिक पेस्टालॉजी के अनुसार**, "शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का प्राकृतिक**,** सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील शक्तियों का विकास है। "इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से असीमित प्रतिभा या गुण निहित होते हैं। शिक्षा उसे विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है।
- **जॉन** डेवी ने शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया: "शिक्षा वह शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य अपने पर्यावरण को नियंत्रित करने और अपनी संभावनाओं को पूरा करने में सक्षम होता है।**"**
- **फ्रोबेल के अनुसार**: "शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चा अपनी आंतरिक क्षमता को इस प्रकार विकसित करता है कि वह बाहरी वातावरण में सार्थक रूप से भाग ले सके। 'जब एक व्यक्ति दूसरे को जानकारी या कौशल प्रदान करता है, तो उस क्रिया को शिक्षण के रूप में वर्णित करना आम बात है।
  - प्रदान करने का मतलब अनुभवों को साझा करना या सूचनाओं को संप्रेषित करना हो सकता है, उदाहरण के लिए, व्याख्यान।
- शिक्षण को कला और विज्ञान दोनों के रूप में माना जाता है।
  - एक कला के रूप में, यह छात्रों को सीखने में सक्षम बनाने के लिए कक्षा में एक सार्थक स्थिति बनाने में शिक्षक की कल्पनाशील और कलात्मक क्षमताओं पर जोर देती है।
  - एक विज्ञान के रूप में, यह लक्ष्यों की प्रभावी उपलब्धि प्राप्त करने के लिए तार्किक, यांत्रिक या प्रक्रियात्मक कदमों पर प्रकाश डालता है।
- विभिन्न शिक्षाविदों की अवधारणा के संबंध में अलग-अलग विचार हैं "शिक्षण एक अधिक परिपक्व व्यक्तित्व और एक कम परिपक्व व्यक्ति के बीच अंतरंग संपर्क है जो बाद की शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है"। मॉरिसन (1934) और डेवी (1934) ने एक समीकरण द्वारा शिक्षण की इस अवधारणा को व्यक्त किया। "शिक्षण सीखना है क्योंकि बेचना खरीदना है"।

मॉरिसन के अनुसार

"शिक्षण एक अनुशासित सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक कम अनुभवी छात्र के व्यवहार को प्रभावित करता है
और उसे समाज की जरूरतों और विचारों के अनुसार विकसित करने में मदद करता है "।

स्मिथ के अनुसार- "शिक्षण विशिष्ट क्रियाकलापों की एक संगठित प्रणाली है जिसका उद्देश्य शिक्षार्थी को सीखने में सहायता करना है
कुछ"।

शिक्षण में 3 प्रक्रियाएं शामिल हैं

1. सीखने का उत्पादन करने वाला एजेंट या स्रोत
2. लक्ष्य या प्राप्त किया जाने वाला लक्ष्य
3. हस्तक्षेप करने वाले चर

गेज (1963) के अनुसार

"शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य किसी अन्य व्यक्ति की व्यवहारिक क्षमता को बदलना है"।

प्रकार

1. **निरंकुश पद्धति - (शिक्षक केंद्रित)**
   - शिक्षक सब कुछ तय करता है
   - अधिक परिपक्व और कम/कोई परिपक्व के बीच कोई प्रतिक्रिया नहीं।
2. **लोकतांत्रिक शिक्षण - सर्वोत्तम विधि**
   - परिभाषा- विद्यार्थी केन्द्रित
   - (प्रतिक्रिया)फीडबैक हमेशा किया जाता है
3. **लाईसेज़ - फेयर टीचिंग - हाथ पीछे खींच लेना**
   - शिक्षक को छात्रों से कोई सरोकार नहीं है।
   - शिक्षक उम्मीद कर रहा है कि छात्र सब कुछ अपने आप करते हैं।
   - यह विधि विषय केन्द्रित है।

मूलभूत शिक्षण मॉडल

शिक्षाशास्त्र मॉडल

शिक्षाशास्त्र बच्चों की सीखने की यात्रा से संबंधित है और इसमें बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम अभ्यास शामिल हैं

शिक्षाशास्त्र को शिक्षण के विज्ञान के रूप में जाना जाता है और यह छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। यह छात्रों के पिछले ज्ञान के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया। इसमें शिक्षक की अहम भूमिका होती है

पाठ्यक्रम में आगे बढ़ना और समस्याओं को हल करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। यह छात्रों को अवधारणाओं को सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें उनकी किताबों के अलावा वास्तविक जीवन की स्थितियों में भी लागू करें।

शिक्षाशास्त्र शैक्षिक संदर्भ में ज्ञान और कौशल प्रदान करने का एक तरीका है।

यह बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र एक अच्छे सीखने के वातावरण में हों, जिससे वे बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकें।

- स्कूली बच्चों को पढ़ाने की कला और विज्ञान
- यह एक निश्चित डिज़ाइन के साथ शिक्षक केंद्रित दृष्टिकोण है।
- शिक्षक छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करता है और उनकी सीखने की प्रक्रिया की निगरानी करता है।

शैक्षणिक कौशल के तत्व:

1. विषय-वस्तु का ज्ञान
2. शिक्षण रणनीतियाँ
3. विषय-वस्तु और सीखने की अवधारणाओं के बारे में छात्रों की समझ
4. शैक्षणिक दृष्टिकोण में, शिक्षार्थी सभी सीखने के लिए प्रशिक्षक पर निर्भर होता है, और शिक्षक इस बात की पूरी जिम्मेदारी लेता है कि क्या पढ़ाया जाएगा और इसे कैसे सिखाया जाएगा।

शैक्षणिक विश्लेषण के घटक:

1. उद्देश्य निर्माण
2. शिक्षण विधियों और सामग्रियों का चयन
3. विषयवस्तु विश्लेषण
4. मूल्यांकन उपकरणों का चयन

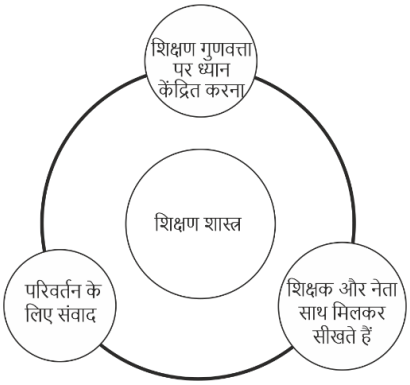

हर्बर्ट के अनुसार, शिक्षण और सीखने के शिक्षणशास्त्र के तत्वों का क्रम है:

1. तैयारी
2. प्रस्तुति
3. संघटन
4. सामान्यीकरण
5. अनुप्रयोग

1. **तैयारी (Preparation):**
   - इस चरण में, विद्यार्थियों के मस्तिष्क को नया ज्ञान ग्रहण करने के लिए तैयार किया जाता है।
   - यह नया ज्ञान पुराने ज्ञान और अनुभवों से जोड़कर सीखने के लिए उपयुक्त माहौल बनाने का प्रयास करता है।
2. **प्रस्तुति (Presentation):**
   - इस चरण में, नया और अद्यतन ज्ञान विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।
   - इसे व्याख्यान, प्रदर्शन, पाठ, वास्तविक जीवन की समस्या, या विचारोत्तेजक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
3. संघटन(**Association):**
   - इस चरण में, शिक्षार्थियों को नए ज्ञान को जो कुछ वे पहले से जानते हैं, उसके साथ जोड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे ऐसे संबंध बनते हैं जो नए ज्ञान को उनके दिमाग या मानसिक योजना में डालने में मदद करते हैं।
4. **सामान्यीकरण (Generalisation):**
   - इस चरण में, विद्यार्थियों को सीखने के अनुभव से कोई सामान्य सिद्धांत या नियम निकालने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह विशिष्ट उदाहरणों या अनुभवों से मुख्य निष्कर्षों को समझने की प्रक्रिया है।
5. अनुप्रयोग (**Application):**
   - अंतिम चरण में, विद्यार्थियों को अपने नए ज्ञान या कौशल को अलग-अलग परिस्थितियों में लागू करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे उनके ज्ञान को मजबूत और अधिक उपयोगी बनाया जाता है।

गुण :

1. विद्यालय स्तर के बच्चों से संबंधित
2. शिक्षक केन्द्रित
3. मूल्यांकन शिक्षकों द्वारा किया जाता है
4. प्रेरणा बाह्य है
5. केवल ग्रेड के लिए पूरा करना

आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र:

यह एक विशेष शिक्षण दृष्टिकोण है जो छात्रों को उन विश्वासों और प्रथाओं पर प्रश्न उठाने और चुनौती देने में मदद करता है, जो समाज और शिक्षा प्रणाली में नियंत्रण स्थापित करते हैं। इसका उद्देश्य छात्रों को **आलोचनात्मक चेतना** प्राप्त करने में सहायता करना है।

एंड्रागॉजी मॉडल

एंड्रागॉजी वयस्कों के लिए एक सीखने का सिद्धांत है जो स्वयं सीखते हैं। इसका अर्थ है कि विद्यार्थी स्वयं-प्रेरित
है और उन्हें अधिक मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है। वे अलग-अलग संसाधनों का उपयोग करके अपने सीखने की चुनौतियों और समस्याओं का समाधान खोजते हैं।
इस प्रारूप में छात्रों का सीखने का अनुभव एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उन्हें विषय में सुधार करने में मदद करता है।
यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें शिक्षक की कोई भूमिका नहीं होगी लेकिन मार्गदर्शन उनके अनुभवों और प्रगति पर चर्चा करने और समस्या समाधान को समझने तक ही सीमित रहेगा।

- **Andragogy के चार मुख्य पहलू-**
    1. शिक्षार्थियों को उनकी योजना और मूल्यांकन में शामिल होना चाहिए।
    2. शिक्षार्थियों को प्रेरित करने के लिए विषय वास्तविक जीवन पर आधारित होने चाहिए।
    3. सीखने का अनुभव होना चाहिए।
    4. छात्रों की सीखने की प्रक्रिया समस्या-केंद्रित होनी चाहिए।
- वयस्क शिक्षा
- शिक्षार्थी अपनी सीखने की प्रक्रिया को स्वयं नियंत्रित करते हैं और स्वयं मूल्यांकन करते हैं।
- यहाँ भूमिका निभाना और अनुकरण करना होता है
- शिक्षार्थी स्वतंत्र होते हैं और सीखने में स्व-निर्देशन के लिए प्रयास करते हैं
- छात्रों की मदद तभी करें जब वे पूछें
- प्रेरणा नैतिकता, आत्मविश्वास और सफल प्रदर्शन से मिलने वाली मान्यता से उत्पन्न होती है।
- शिक्षक एक मार्गदर्शक और सुविधादाता (facilitator) की भूमिका निभाते हैं। वे छात्रों को स्वयं सीखने के अवसर प्रदान करते हैं ताकि वे नए ज्ञान और कौशल अर्जित कर सकें।
- यह स्व-निर्देशित और स्वायत्त शिक्षार्थियों की मानवतावादी अवधारणा पर आधारित है जहां शिक्षकों या मार्गदर्शकों को सीखने की सुविधा प्रदान करने वालों के रूप में परिभाषित किया गया है।
- यह बच्चों की शिक्षा (शिक्षणशास्त्र) से पूरी तरह अलग है।
- वयस्क अपने पिछले अनुभवों (जिसमें गलतियाँ करना भी शामिल है) से सबसे बेहतर सीखते हैं।
- वयस्कों को सीखने के लिए तत्परता विकसित करने के लिए, उन्हें हमेशा यह जानने की ज़रूरत होती है कि वे जो विषय/विषय सीख रहे हैं उसका उनके व्यक्तिगत जीवन, करियर या सामाजिकता पर क्या प्रभाव पड़ेगा।
- यह विधि समुदायों में सीखने की भूमिका को नजरअंदाज करती है (नुकसान)

एंड्रागॉजी के लिए तकनीकी निर्देश:

1. भूमिका निभाना
2. कहानी सुनाना
3. सूक्ष्म शिक्षण
4. गहन शिक्षा

एंड्रागॉजी के कुछ प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं

- **स्व-निर्देशित (Self-Directed):** वयस्क छात्र स्व-निर्देशित होना चुनते हैं और अपने सीखने पर नियंत्रण रखना चाहते हैं, बजाय इसके कि उन्हें बताया जाए कि क्या सीखना है।
- **अनुभवी (Experienced):** वयस्क अपने जीवन के अनुभवों और ज्ञान का खजाना लेकर आते हैं और इन अनुभवों को सीखने की प्रक्रिया में महत्व और उपयोग देना चाहिए।
- **प्रासंगिकता (Relevance):** वयस्क कुछ नया सीखने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं जब विषय-वस्तु उनकी व्यक्तिगत या व्यावसायिक आवश्यकताओं से संबंधित होती है।
- **समस्या-केंद्रित (Problem-Centered):** वयस्क आमतौर पर वास्तविक दुनिया की समस्याओं या चुनौतियों से सीखने के लिए प्रेरित होते हैं, और हमेशा समस्या-समाधान और व्यावहारिक अनुप्रयोगों के माध्यम से सीखने के लिए तैयार रहते हैं।
- **आंतरिक प्रेरणा (Internal Motivation):** वयस्क सीखने के लिए आंतरिक रूप से प्रेरित या स्व-प्रेरित होते हैं, जो बाहरी पुरस्कारों या परिणामों के बजाय व्यक्तिगत लक्ष्यों और जरूरतों से प्रेरित होते हैं।

ह्युटागॉजी मॉडल

- स्वनिर्धारित अधिगम
- शिक्षार्थी अत्यधिक स्वायत्त होते हैं।
- यहाँ डबल लूप अधिगम किया जाता है।
- स्व-प्रबंधित शिक्षार्थियों के लिए अधिगम का प्रबंधन।
- स्वायत्तता, क्षमता और क्षमताओं के विकास पर ध्यान केंद्रित।
- यह न तो योजनाबद्ध है और न ही रैखिक।

1. अन्वेषण पद्धति (ह्यूरिस्टिक विधि)

- यह मनोवैज्ञानिक सिद्धांत परीक्षण और त्रुटि (trial-and-error) पर आधारित है, जिसमें तार्किक और कल्पनाशील सोच की आवश्यकता होती है।
- इस विधि में शिक्षक विद्यार्थियों को प्रश्न देते हैं और विभिन्न साधनों जैसे पुस्तकालय, प्रयोगशाला आदि का उपयोग कर समाधान खोजने के लिए प्रेरित करते हैं।
- इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में समस्या समाधान करने की प्रवृत्ति विकसित करना है।
- यह विधि शिक्षार्थी(छात्रों) के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है।
- विद्यार्थियों को उच्च बुद्धि की आवश्यकता है।
- विषयवस्तु को पाठ्यक्रम से संबंधित होना चाहिए।

संज्ञान/अनुभूति (Cognition)

- संज्ञानात्मक विकास का अर्थ है सोचना, समझना और अवधारणा का निर्माण करना।
- इसमें जानना, सोचना, याद रखना, पहचानना, वर्गीकरण करना, कल्पना करना, तर्क करना, निर्णय लेना आदि जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं शामिल हैं।
- यह ज्ञान और समझ प्राप्त करने में उपयोग होने वाली मानसिक प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है।
- इन प्रक्रियाओं में सोच, जानना, याद रखना, निर्णय लेना और समस्या-समाधान करना शामिल हैं।
- ये मस्तिष्क के उच्च-स्तरीय कार्य हैं और इसमें भाषा, कल्पना, धारणा और योजना बनाना शामिल है।
- पियाजे के अनुसार, जैसे-जैसे शिक्षार्थी नई अवधारणाओं और चुनौतियों के संपर्क में आते हैं, उनकी दुनिया की समझ विस्तृत होती जाती है। शिक्षार्थी अपने परिवेश के साथ संपर्क करके स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं।
- अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धांत में यह बताया गया है कि मस्तिष्क जानकारी के प्रसंस्करण और व्याख्या का एक अद्भुत नेटवर्क है। मस्तिष्क में होने वाली प्रक्रियाओं को समझना महत्वपूर्ण है।
- यही कारण है कि संज्ञानात्मक सिद्धांत महत्वपूर्ण है। यह बताता है कि आंतरिक प्रक्रियाओं का ज्ञान अधिगम को समझने के लिए आवश्यक है।
- जो अधिगम रणनीतियाँ अधिक कार्य-विशिष्ट होती हैं, उन्हें संज्ञानात्मक कहा जाता है।

मेटा संज्ञान/मेटाकॉग्निशन(MetaCognition)

- यह संज्ञान (Cognition) का एक प्रकार और उसका अनुप्रयोग है।
- यह व्यक्तिगत संज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन है।
- यह हमेशा इस बात पर प्रभाव डालता है कि छात्र किसी सामग्री को कितनी अच्छी तरह और कितनी तेजी से सीखते हैं।
- यह अपनी स्वयं की सोच प्रक्रिया के प्रति जागरूकता और समझ को संदर्भित करता है।

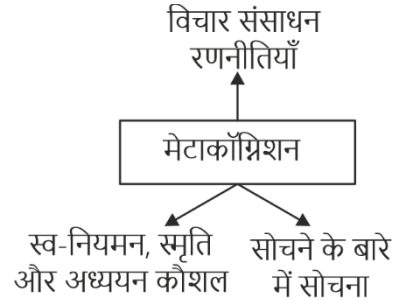

मेटाकॉग्निशन अभ्यास (Meta Cognition Practices)

1. लक्ष्य निर्धारित करना
2. प्रक्रियाओं की निगरानी करना
3. अधिगम रणनीतियों पर चिंतन करना
4. नियमन
5. रणनीतिक योजना बनाना
6. समस्या समाधान और आलोचनात्मक सोच
7. चिंतन और मूल्यांकन

स्व-निर्देशित अधिगम में मेटाकॉग्निशन ज्ञान में शामिल हैं:

1. सामग्री(विषयवस्तु) ज्ञान ()
2. तथ्यात्मक ज्ञान ()
3. प्रक्रियात्मक ज्ञान
4. घोषणात्मक ज्ञान (Declarative Knowledge)
5. शर्तीय ज्ञान

- **मेटाकॉग्निशन** वे प्रक्रियाएं हैं जो किसी को अपनी स्वयं की सीखने की गतिविधियों को निर्देशित, नियंत्रित और पर्यवेक्षण करने की अनुमति देती हैं। यह अपने सोचने की प्रक्रियाओं के बारे में सोचने की क्षमता को संदर्भित करता है।
- यह हमेशा हमारे संज्ञानात्मक (कॉग्निटिव) प्रक्रियाओं को समझने और उनके प्रति जागरूक होने को शामिल करता है। इसमें **योजना बनाना, निगरानी करना, और अपने अधिगम और समस्या-समाधान गतिविधियों का मूल्यांकन करना** शामिल है।
- **मेटाकॉग्निटिव कौशल** विकसित करने का अर्थ है छात्रों को अपने अधिगम प्रक्रियाओं के प्रति अधिक जागरूक और नियंत्रित बनाना।
- यह उन्हें अपने सोचने के तरीके (मेटाकॉग्निशन) के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है और उन्हें अपनी अधिगम रणनीतियों, ताकतों और सुधार के क्षेत्रों के प्रति अधिक सचेत बनाता है। यह छात्रों को अधिक आत्मनिर्भर और प्रभावी शिक्षार्थी बनने में सहायता करता है।

मेटाकॉग्निशन के महत्वपूर्ण घटक:

1. **योजना (Planning):** यह घटक लक्ष्यों को निर्धारित करने, उपयुक्त रणनीतियों को चुनने और किसी विशेष अधिगम उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक चरणों को व्यवस्थित करने से संबंधित है।
2. **निगरानी (Monitoring):** अधिगम(सीखने) या समस्या-समाधान गतिविधियों के दौरान, मेटाकॉग्निटिव कौशल वाले व्यक्ति नियमित रूप से अपनी प्रगति और विकास का मूल्यांकन करते हैं। वे हमेशा यह जांचते हैं कि उनकी वर्तमान रणनीतियाँ प्रभावी हैं या नहीं और यदि आवश्यक हो तो उनमें समायोजन करते हैं।
3. **मूल्यांकन (Evaluation):** किसी कार्य या अधिगम गतिविधि के पूरा होने के बाद, व्यक्ति अपने प्रदर्शन पर विचार करते हैं। वे अपनी रणनीतियों की सफलता का मूल्यांकन करते हैं और भविष्य में सुधार के लिए क्या अलग किया जा सकता है, इस पर विचार करते हैं।

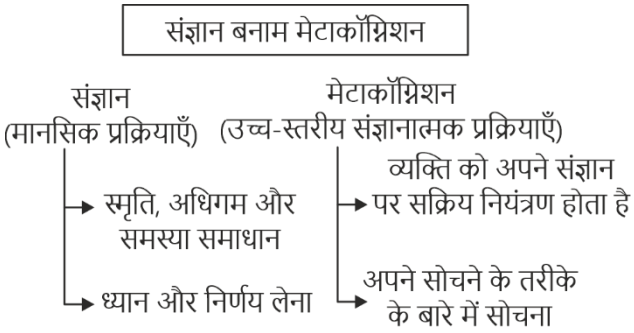

शिक्षण के लक्षण

शिक्षण की विशेषताएं इस प्रकार हैं -

1. शिक्षण शिक्षक और छात्रों के बीच एक प्रभावी अंतःक्रिया है।
2. शिक्षण कला और विज्ञान दोनों है। शिक्षण एक कला है क्योंकि यह प्रतिभा और रचनात्मकता के अभ्यास की मांग करता है। विज्ञान के रूप में शिक्षण में तकनीकों, प्रक्रियाओं और कौशलों का एक भंडार शामिल होता है, जिसका व्यवस्थित रूप से अध्ययन, वर्णन और सुधार किया जा सकता है। एक अच्छा शिक्षक वह है जो बुनियादी प्रदर्शनों की सूची में रचनात्मकता और प्रेरणा जोड़ता है।
3. शिक्षण के विभिन्न रूप हैं, जैसे औपचारिक और अनौपचारिक, प्रशिक्षण , शर्तबद्धता या सिद्धांत आदि।
4. संचार के कौशल में शिक्षण का प्रभुत्व है।
5. शिक्षण एक त्रिगुणित प्रक्रिया है; तीन ध्रुव हैं, शैक्षिक उद्देश्य, सीखने के अनुभव और व्यवहार में परिवर्तन।
6. शिक्षण सुनियोजित होना चाहिए और शिक्षक को शिक्षण और मूल्यांकन तकनीकों के उद्देश्य तरीके तय करने चाहिए।
7. शिक्षण निर्देश देने (Dictating) की बजाय सुझाव देने (Suggesting) पर आधारित होना चाहिए।
8. अच्छा शिक्षण लोकतांत्रिक है और शिक्षक छात्रों का सम्मान करता है, उन्हें प्रश्न पूछने, प्रश्नों के उत्तर देने और चीजों पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
9. शिक्षण छात्रों को मार्गदर्शन, दिशा और प्रोत्साहन प्रदान करता है।
10. शिक्षण एक सहकारी गतिविधि है और शिक्षक को छात्रों को विभिन्न कक्षा गतिविधियों में शामिल करना चाहिए, जैसे संगठन, प्रबंधन, चर्चा, सस्वर पाठ और परिणामों का मूल्यांकन।
11. शिक्षण दयालु और सहानुभूतिपूर्ण है, और एक अच्छा शिक्षक बच्चों में भावनात्मक स्थिरता विकसित करता है।
12. शिक्षण उपचारात्मक है, और शिक्षक को छात्रों की सीखने की समस्याओं को हल करना चाहिए।
13. शिक्षण बच्चों को जीवन में समायोजन करने में मदद करता है।
14. शिक्षण एक व्यावसायिक गतिविधि है जो बच्चों के सामंजस्यपूर्ण विकास में मदद करती है।
15. शिक्षण छात्रों की सोचने की शक्ति को उत्तेजित करता है और उन्हें स्व-शिक्षण की ओर निर्देशित करता है।
16. शिक्षण का अवलोकन, विश्लेषण और मूल्यांकन किया जा सकता है।
17. शिक्षण एक विशेष कार्य है और निर्देशात्मक उद्देश्यों के एक निर्दिष्ट सेट की प्राप्ति के लिए घटक कौशल के एक सेट के रूप में लिया जा सकता है।

शिक्षण शैली

1. औपचारिक प्राधिकरण
2. प्रदर्शक
3. सुविधा
4. प्रतिनिधि

1. औपचारिक प्राधिकरण

- निरंकुश यानी [शिक्षक केंद्रित]
- केवल सामग्री पर ध्यान दें
- शिक्षक एक छात्र को प्राप्त करता है।

2. व्यक्तिगत मॉडल शिक्षण का प्रदर्शन

- शिक्षक केन्द्रित
- डेमो और मॉडलिंग पर ध्यान दें

उदा. प्रयोगशाला प्रयोग

- शिक्षक प्रदर्शन करते हैं और छात्र उनसे सीखते हैं। छात्रों को केवल देखने की अनुमति है

3. सुविधा

- जो कार्य को पूरा करने में सहयोग/मदद करते हैं
- गतिविधि पर ध्यान दें
- विद्यार्थी केन्द्रित, उदाहरण: विद्यार्थियों ने प्रयोगशाला में स्वयं प्रयोग किया।
- छात्रों के सहयोग, सक्रिय सीखने और समस्या समाधान के लिए सामूहिक गतिविधियां करना।
- गतिविधि भूमिका-खेल, खेल आदि के माध्यम से सीखना है।

4. डैलिगेटर

- छात्रों (एकल / समूह) पर सीखने का नियंत्रण या जिम्मेदारी है
- पूर्व। - केवल छात्रों द्वारा बनाए गए स्कूल प्रोजेक्ट। शिक्षक केवल विषय देते हैं।
- उच्च शिक्षा में उपयोग किया जाता है
- शिक्षक सलाहकार की भूमिका के रूप में कार्य करता है, छात्रों को केवल समस्या समाधान में मदद करता है।

शिक्षण के विभिन्न स्तर

शिक्षक को अवधारणाओं और विषय की तीव्रता के आधार पर शिक्षण के स्तर का चयन करना होता है

एक शिक्षक स्थिति के आधार पर कक्षा में विभिन्न भूमिकाएँ लेता है। आइए हम के स्तरों का पता लगाएं

शिक्षण।

हम सभी जानते हैं कि शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है। शिक्षण के माध्यम से एक शिक्षक वांछनीय परिवर्तन लाता है

शिक्षण और अधिगम (Teaching and Learning) के दोनों ही पहलू एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

शिक्षण और अधिगम का अंतिम लक्ष्य शिक्षार्थी के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना है।

शिक्षण के दौरान एक अनुभवी व्यक्ति (शिक्षक) और एक अनुभवहीन व्यक्ति (विद्यार्थी) के बीच एक संवाद होता है। ।

इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

शिक्षक तीन स्तरों पर छात्रों को पढ़ाते हैं। शिक्षण का प्रभावी होना शिक्षार्थियों की विकासात्मक अवस्था पर निर्भर करता है, ताकि वांछित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके।

ये तीन स्तर इस प्रकार हैं -

1. **स्मृति स्तर-** विचारहीन शिक्षण
2. **समझ का स्तर -** विचारशील शिक्षण
3. **चिंतनशील स्तर -** ऊपरी विचारशील स्तर

1. शिक्षण का स्मृति स्तर (एमएलटी)

- शिक्षण के स्मृति स्तर का उद्देश्य सिर्फ शिक्षार्थी को सूचना या ज्ञान प्रदान करना है। यह ज्ञान या जानकारी प्रकृति में तथ्यात्मक है, जो एक यांत्रिक प्रक्रिया (अर्थात् याद रखना या रटना सीखना) के माध्यम से प्राप्त की जाती है।
- शिक्षण का स्मृति स्तर केवल ब्लूम के वर्गीकरण के ज्ञान आधारित उद्देश्य को कवर करता है जहां छात्र वस्तुओं, घटनाओं, विचारों और अवधारणाओं को पहचानना, याद रखना या याद रखना सीखते हैं और उन्हें स्मृति में बनाए रखते हैं।
- स्मृति स्तर के शिक्षण में अंतर्दृष्टि का अभाव होता है। मनोवैज्ञानिक रूप से, यह संज्ञानात्मक स्तर का शिक्षण है।

(A) हर्बर्ट द्वारा स्मृति स्तर

- शिक्षण का प्रारंभिक चरण (आधार) (निम्नतम स्तर)
- रटने की प्रक्रिया उदाहरण: नर्सरी कक्षा में बच्चों को A, B, C, D रटाया जाता है।
- उत्तेजना - प्रतिक्रिया (Stimulus - Response) किया जाता है।
- मूल्यांकन मौखिक और लिखित होता है।
- यह बुद्धि में सुधार नहीं करता है और छात्रों की क्षमता में वृद्धि नहीं करता है लेकिन अन्य प्रकार के शिक्षण स्तरों के लिए आवश्यक है।

(B) शिक्षण के स्मृति स्तर के महत्वपूर्ण बिंदु (MLT)

- **यह हर्बर्ट की सराहना सिद्धांत द्वारा समर्थित है** जिसमें कहा गया है कि शिक्षण का यह स्तर शिक्षार्थी को तथ्यों और प्रतीकों के बीच के संबंध से परिचित कराने का प्रयास करता है।
- तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त करना शिक्षण का पहला चरण है। निचली कक्षाओं के बच्चों के लिए उपयोगी है क्योंकि उनकी बुद्धि का विकास हो रहा होता है और उनकी स्मरण शक्ति अच्छी होती है।
- स्मृति स्तर शिक्षण (एमएलटी) का उद्देश्य तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त करना, स्मृति को प्रशिक्षित करना, स्मृति भंडारण में सीखने की सामग्री को फिर से प्रशिक्षित करना, आवश्यकता पड़ने पर सीखी गई जानकारी को पुन: प्रस्तुत करना और पहचानना है।
  - शिक्षक-प्रधान पद्धतियों का उपयोग किया जाता है- जैसे ड्रिल, पुनरावलोकन (Review), संशोधन (Revision), और प्रश्न पूछना। मूल्यांकन प्रणाली में मुख्य रूप से मौखिक, लिखित और निबंध-प्रकार की परीक्षाएं शामिल हैं।
  - अच्छी याददाश्त में सीखने में तेजी, अवधारण की स्थिरता, याद करने में तेजी, और सचेत स्तर पर केवल वांछित सामग्री लाने की क्षमता शामिल है।
  - स्मृति स्तर शिक्षण शिक्षण के समझने और चिंतनशील स्तरों के लिए पहले चरण के रूप में कार्य करता है। यह समझने के स्तर के शिक्षण के लिए एक पूर्व-आवश्यकता है।

(C) गुण / लाभ शिक्षण का स्मृति स्तर

- छोटे बच्चों के लिए उपयोगी
- तथ्यों, मॉडलों और संरचना की जानकारी के अधिग्रहण के लिए उपयोगी
- बच्चों को एक नई अवधारणा सीखने में मदद करें
- धीमी गति से सीखने वालों के लिए उपयोगी

(D) शिक्षण के स्मृति स्तर के दोष/हानि

- उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त नहीं है
- रटने पर जोर
- शिक्षक का दबदबा
- कक्षा में थोड़ी बातचीत
- छात्रों के लिए कोई पहल और आत्म-अध्ययन का अवसर नहीं –
- आंतरिक प्रेरणा नहीं
- कक्षा प्रबंधन की समस्या
- याद और प्रतिधारण(पुनःस्मरण)का नुकसान।

2. शिक्षण का स्तर समझना (यूएलटी**)**

- यह स्मृति स्तर (MLT) और चिंतनशील स्तर (RLT) के बीच में आता है। शिक्षण के इस चरण में मध्यम स्तर का विचारशील व्यवहार शामिल है। यह चिंतनशील स्तर के शिक्षण-अधिगम के लिए एक पूर्व-आवश्यकता है, जिसके लिए उच्च मानसिक प्रक्रियाओं के उपयोग की आवश्यकता होती है। "समझ" का शाब्दिक अर्थ है किसी चीज को जानना, उसकी व्याख्या करना, उसका अर्थ समझना और उसका उपयोग करना।
- मॉरिसन ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि समझ केवल कुछ याद करने में सक्षम होना नहीं है; यह केवल विशिष्ट तथ्यों से निकाला गया सामान्यीकरण नहीं है; यह एक अंतर्दृष्टि है कि भविष्य की स्थितियों में इसका उपयोग कैसे किया जा सकता है। मॉरिसन ने जोर देकर कहा कि सभी शिक्षण का परिणाम 'प्रभुत्व' है और तथ्यों को याद रखना नहीं है। उन्होंने एक इकाई योजना प्रस्तावित की, प्रत्येक इकाई एक अंतर्दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने आप में अपेक्षाकृत पूर्ण है।
- समझ स्तर शिक्षण (ULT)
- बौद्धिक व्यवहार विकसित करें
- स्मृति + अंतर्दृष्टि
- विकास पद्धति = लिखित + उद्देश्य
- कि आप जीवन भर अर्थ का अनुभव करते हैं ।

उदाहरण: एमएलटी में हम सब कुछ रटते हैं और कभी भी अर्थ निकालने की कोशिश नहीं करते हैं लेकिन यूएलटी में हम हर शब्द का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं और उनका उपयोग करने की कोशिश करते हैं।

- तो यह किसी तरह एमएलटी पर आधारित है।
- विषय की महारत पर ध्यान दें (विषय केंद्रित)

(A) महत्वपूर्ण बिंदु

- मॉरिसन शिक्षण के समझने के स्तर (ULT) के मुख्य प्रस्तावक हैं।
- यह 'स्मृति और अंतर्दृष्टि' है क्योंकि यह केवल तथ्यों को याद करने से परे है।
- यह विषय की महारत पर केंद्रित है।
- यह विद्यार्थियों को सामान्यीकरण, सिद्धांतों और तथ्यों को समझने में मदद करता है।
- यह छात्रों को 'बौद्धिक व्यवहार' विकसित करने के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान करता है।
- यह तथ्यों के आत्मसात करने के लिए छात्र और शिक्षक दोनों के लिए एक सक्रिय भूमिका प्रदान करता है।
- मूल्यांकन प्रणाली में मुख्य रूप से निबंध और वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न दोनों शामिल होते हैं।

(B) शिक्षण के स्तर को कम आंकने के गुण/लाभ (यूएलटी**)**

- प्रभावी शिक्षण
- विभिन्न संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास
- शिक्षण के चिंतनशील स्तर में प्रवेश करने के लिए चरण निर्धारित करता है
- प्रभावी कक्षा सहभागिता

(C) शिक्षण के **स्तर के दोष या नुकसान (**यूएलटी**)**

- उच्च संज्ञानात्मक क्षमताओं की उपेक्षा करता है
- आंतरिक प्रेरणा पर कम जोर
- कोई व्यक्तिगत शिक्षा नहीं
- शिक्षक केन्द्रित

3. शिक्षण का चिंतनशील स्तर (आरएलटी) (2016)

- चिंतनशील स्तर की शिक्षा (RLT) शिक्षण-प्रक्रिया का सबसे उच्च स्तर है। इस स्तर पर छात्र केवल तथ्यों को याद नहीं करते या प्रश्नों के उत्तर नहीं देते, बल्कि वे गहराई से सोचते हैं, विषयवस्तु का गंभीरता से विश्लेषण करते हैं, और उसे अपने जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए उपयोग करते हैं। यह स्तर छात्रों को आत्मनिरीक्षण करने और प्रस्तुत सामग्री पर गहराई से विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

(A) शिक्षण के चिंतनशील स्तर के मुख्य उद्देश्य हैं

- समस्याओं को हल करने के लिए शिक्षार्थी में अंतर्दृष्टि विकसित करना।
- छात्रों में तर्कसंगत और आलोचनात्मक सोच विकसित करना। छात्रों में स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना।

(B) महत्वपूर्ण बिंदु

- हंट चिंतनशील शिक्षण स्तर के मुख्य प्रस्तावक है।
- यह शिक्षण का उच्चतम स्तर है और इसमें TILT और MIT सेलेक्ट लैंग्वेज दोनों शामिल हैं
- यह शिक्षण का समस्या केन्द्रित उपागम है।
- छात्रों को समस्या को हल करने के लिए किसी प्रकार के शोध दृष्टिकोण को अपनाने की अपेक्षा की जाती है। कक्षा का वातावरण पर्याप्त रूप से 'खुला और स्वतंत्र' होना चाहिए। शिक्षार्थी स्व-प्रेरित (आंतरिक) और सक्रिय होते हैं।
- इसका उद्देश्य शिक्षार्थियों की चिंतन शक्ति का विकास करना है ताकि वे तर्क, तर्क और कल्पना द्वारा अपने जीवन की समस्याओं को हल कर सकें और सफल और सुखी जीवन व्यतीत कर सकें।
- छात्र को प्राथमिक स्थान प्राप्त होता है और शिक्षक को द्वितीयक स्थान पर होता है।
- निबंध-प्रकार परीक्षण का उपयोग मूल्यांकन के लिए किया जाता है। दृष्टिकोण, विश्वास और भागीदारी का भी मूल्यांकन किया जाता है।

(C) शिक्षण के चिंतनशील स्तर (आरएलटी) के गुण या लाभ

- यह शिक्षण का सबसे विचारशील तरीका है।
- शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण
- समस्या समाधान की क्षमता का विकास
- प्रतिभाशाली बच्चों के लिए उपयोगी।
- अधिकतम लचीलापन प्रदान करता है
- स्व प्रेरणा
- रचनात्मकता का विकास

(D) समझने के स्तर की शिक्षा के 5 चरण (मॉरिसन के अनुसार):

1. **अन्वेषण** (**Exploration):** शिक्षक छात्रों के शुरुआती ज्ञान (पूर्व ज्ञान) को समझने का प्रयास करता है।
2. **प्रस्तुति** (**Presentation):** विषय-वस्तु का अवलोकन दिया जाता है और पूरी इकाई की संरचना पर चर्चा की जाती है।
3. **अभिग्रहण** (**Assimilation):** छात्र विषयवस्तु का गहराई से अध्ययन करते हैं और इसे अपने अनुभवों से जोड़ने का प्रयास करते हैं।
4. **संगठन** (**Organization):** छात्र शिक्षक की सहायता के बिना अर्जित ज्ञान को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करते हैं।
5. **पुनरावृत्ति** (**Recitation):** इस चरण में छात्र सीखी गई विषयवस्तु को मौखिक रूप से व्यक्त करते हैं और पूरे विषय पर पुनः विचार करते हैं।

(E) शिक्षण के चिंतनशील स्तर के दोष

- यह निम्न वर्ग के लिए उपयुक्त नहीं है
- यह एक समय लेने वाली प्रक्रिया है।
- यह सुस्त छात्रों के लिए लागू नहीं है।
- पढ़ाने का अतिरिक्त बोझ है

(F) चिंतनशील स्तर (RLT) - या आत्मनिरीक्षण स्तर

- समस्या केंद्रित - सिखाता है कि कोई कैसे हल कर सकता है - वास्तविक जीवन की समस्याएं।
- **ULT (समझ स्तर)** और **MLT (स्मृति स्तर)** (विद्यार्थी केंद्रित) पर आधारित
- वातावरण में खुला और स्वतंत्र ।
- मनोवृत्ति + विश्वास + भागीदारी का मूल्यांकन ज्यादातर निबंध प्रकार का उपयोग करके किया जाता है।
- **उदाहरण :** एसएससी और अन्य परीक्षाओं में हमें निबंध लिखना होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परीक्षक हमारी मानसिकता, सोच के स्तर को जानना चाहता है।
- उच्चतम स्तर- किसी चीज के बारे में गहराई से सोचना
- शिक्षक की भूमिका लोकतांत्रिक है।

प्रभावी शिक्षण अभ्यास

शिक्षण के सिद्धांत

सूत्र वे आधारभूत नियम या सिद्धांत हैं जो समय के साथ विकसित हुए हैं। ये शिक्षकों और छात्रों के लिए भविष्य की शिक्षा और व्यवहार के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। शिक्षण के भी अपने स्वयं के सिद्धांत होते हैं, जिनकी चर्चा नीचे की गई है।

1. **सरल से जटिल की ओर** - शिक्षक को सरल चीजों और विचारों से शुरुआत करनी चाहिए और यदि संभव हो तो इसे दिन-प्रतिदिन के उदाहरणों के साथ किया जा सकता है। फिर धीरे-धीरे एक शिक्षक अवधारणाओं और तकनीकी शब्दों की ओर बढ़ सकता है। यह शिक्षार्थियों में नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए रुचि पैदा करता है। यह बेहतर अवधारणा में सहायक है।
2. **ज्ञात से अज्ञात की ओर** - यह सूत्र पहले सूत्र से संबंधित है। नई जानकारी को पहले से ज्ञात जानकारी से जोड़ने पर उसे समझना और याद रखना आसान हो जाता है।
3. वर्तमान से भूत और भविष्य की ओर **:-** छात्रों को वर्तमान के बारे में ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए और फिर वे भूत और भविष्य को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं
4. **ठोस से अमूर्त की ओर:-** ठोस वस्तुओं के साथ छात्रों का मानसिक विकास बेहतर होता है, शिक्षक को पहले ठोस चीजों का परिचय कराना चाहिए और फिर बाद में उन चीजों के लिए अमूर्त (abstract) शब्दों का उपयोग करना चाहिए।
5. **विशिष्ट से सामान्य की ओर** - विद्यार्थियों को पहले उदाहरण प्रस्तुत किए जाने चाहिए और फिर उन्हें सामान्य नियम और उनकी व्युत्पत्ति समझाई जा सकती है। प्रयोग और प्रदर्शन इस उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।
6. **पूर्ण से अंश की ओर वास्तव में विद्यालय को परिवर्तित किया जा सकता है** - गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि हम पहले संपूर्ण वस्तु को देखते हैं और फिर उसके भागों को। उदाहरण के लिए, हम पहले पेड़ को देखते हैं और फिर उसके तने, शाखाओं, पत्तियों आदि को देखते हैं। इसलिए विषयों का परिचय या सारांश पहले देना आवश्यक है।
7. **अनिश्चित से निश्चित कुछ भी नहीं** - शिक्षक को अनिश्चित ज्ञान को निश्चित में बदलने में मदद करनी चाहिए और छात्रों की संदेहों को स्पष्ट करने का लक्ष्य रखना चाहिए
8. **मनोवैज्ञानिक से तार्किक की ओर** - प्रारंभिक अवस्था में मनोवैज्ञानिक क्रम अधिक महत्वपूर्ण होता है, जबकि बड़े शिक्षार्थियों के लिए तार्किक क्रम पर अधिक बल दिया जाता है।
9. **विश्लेषण से संश्लेषण की ओर:-** शुरू में छात्रों को विषयों के बारे में बहुत कम या प्रचलित ज्ञान होता है, विश्लेषण का अर्थ है समस्याओं को उसके घटक भागों में विभाजित करना, और फिर उनका अध्ययन किया जाता है बहुत अच्छा संश्लेषण का अर्थ है भागों का विश्लेषण करके प्राप्त ज्ञान को जोड़कर समझना पूर्ण विराम एक शिक्षक को विश्लेषण का उपयोग करना चाहिए बहुत अच्छा संश्लेषण का अर्थ है भागों का विश्लेषण करके प्राप्त ज्ञान को जोड़कर समझना। शिक्षक को विश्लेषणात्मक-संश्लेषण पद्धति का उपयोग करना चाहिए।
10. **प्रकृति का पालन करना** - इसका अर्थ है कि शिष्य की शिक्षा को उसकी प्रकृति के अनुसार नियमित करना
11. **इंद्रियों का प्रशिक्षण** - संवेदक के प्रकार, जैसे पक्ष, श्रवण कुमार परीक्षण कुमार गंध और स्पर्श ज्ञान के द्वार हैं। यह बेहतर है कि इन सभी सेंसरों का अधिकतम उपयोग शिक्षण में किया जा सके।
12. **स्वाध्याय को प्रोत्साहन** - डाल्टन की **प्रणाली स्व-अध्ययन** पर आधारित है

ब्लूम की वर्गीकरण पद्धति

- ब्लूम की वर्गीकृत प्रणाली एक ऐसा शैक्षिक मॉडल है जो बुद्धिमत्ता, सोचने, सीखने, और समझने के विभिन्न स्तरों को परिभाषित करता है। इसका उपयोग पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, और शिक्षण विधियों को सुधारने के लिए किया जाता है।
- मूल रूप से 1956 में शुरू की गई, ब्लूम की वर्गीकरण श्री बेंजामिन ब्लूम द्वारा श्री एडवर्ड फर्स्ट , श्री मैक्स एंगलहार्ट, श्री डेविड क्रैथवोल और श्री वाल्टर हिल के साथ बनाई गई एक अवधारणा थी। अवधारणा या बल्कि शैक्षिक मॉडल ने शिक्षा के स्तरों के साथ-साथ उन कौशलों को वर्गीकृत किया है जिन्हें जब भी शिक्षक कुछ सिखाता है तो उन्हें प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

ब्लूम की वर्गीकरण के तीन प्रमुख क्षेत्र

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र

ब्लूम के वर्गीकरण के संज्ञानात्मक क्षेत्र में, ज्ञान और बौद्धिक कौशल के विकास पर प्रमुख ध्यान दिया जाता है। जटिलता के अनुसार, संज्ञानात्मक क्षेत्र के छह उप-शीर्ष हैं ।

(i) ज्ञान - तथ्यों, आंकड़ों और बुनियादी अवधारणाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।

(ii) समझ - ज्ञान चरण के दौरान एकत्रित तथ्यों को समझना।

(iii) अनुप्रयोग - ज्ञान और अवधारणाओं को सर्वोत्तम तरीके से लागू करना।

(iv) विश्लेषण - अनुप्रयोग का विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना और अनुप्रयोग के विभिन्न पहलुओं के बीच संबंधों को समझना।

(v) मूल्यांकन - आवेदन से उत्पन्न जानकारी के बारे में निष्कर्ष निकालना और उसका बचाव करना।

(vi) सृजन - वास्तविक अनुप्रयोग की योजना, डिजाइन, विकास करके नए परिणाम बनाना।

2. भावात्मक क्षेत्र 2005

ब्लूम के वर्गीकरण का यह क्षेत्र अनुभवों और भावनाओं से संबंधित है। इसमें जटिल विचार और विवेक, घटनाएं और चरित्र शामिल हैं। इस प्रकार यह दृष्टिकोण, प्रेरणा, भाग लेने की इच्छा, जो सीखा जा रहा है उसका मूल्यांकन और अंतत: अनुशासन के मूल्यों को जीवन के तरीके में शामिल करने से संबंधित है। यह बेहतर छात्र भागीदारी के लिए कहता है। भावात्मक क्षेत्र के मुख्य पहलू इस प्रकार हैं-

- **स्वीकृति (Reception):** सुनने की इच्छा।
- **प्रतिक्रिया (Response):** भाग लेने की इच्छा।
- **मूल्यांकन (Values):** भाग लेने और शामिल होने की इच्छा।
- **संगठन (Organization):** किसी विचार के पक्ष में खड़ा होना।
- **चरित्र निर्माण (Characterization):** अपने व्यवहार या जीवनशैली को बदलने की इच्छा।

3. मनोसामाजिक (मनोदैहिक) क्षेत्र

ब्लूम के वर्गीकरण का मनोसामाजिक (मनोदैहिक) क्षेत्र एक छात्र के शरीर के समन्वय, संवेदी अंग आंदोलन और शारीरिक आंदोलन से संबंधित है। मूल रूप से यह तकनीकी कौशल के अधिग्रहण से संबंधित है। इस क्षेत्र में कुशलता प्राप्त करने के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है। ड्राइविंग, कीबोर्ड बजाना, गिटार बजाना, मनोसामाजिक क्षेत्र के प्रमुख उदाहरण हैं।

मनोदैहिक क्षेत्र के पांच स्तर

1. **अनुकरण** - इसमें एक कुशल व्यक्ति द्वारा कौशल का प्रदर्शन शामिल है और शिक्षार्थी उसी का पालन करने का प्रयास करते हैं।
2. **संचालन** - एक शिक्षार्थी विभिन्न पहलुओं का प्रयोग करने की कोशिश करता है, जैसे मशीनरी, उपकरण आदि में हेरफेर करना।
3. **परिशुद्धता(सटीकता)** - अभ्यास के साथ विभिन्न कार्यों को करने में शुद्धता बढ़ती है।
4. **अभिव्यक्ति** - अभ्यास के माध्यम से वांछित स्तर की दक्षता और प्रभावशीलता प्राप्त करना।
5. **प्राकृतिककरण** - कौशल आंतरिक है और एक व्यक्ति स्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार नई तकनीकी, विधियों या प्रक्रियाओं को अनुकूलित, संशोधित या डिजाइन करने में सक्षम है।

ब्लूम की वर्गीकरण के अनुप्रयोग

- शब्दों, वाक्यांशों, मुहावरों का अर्थ खोजना जो पैराग्राफ में आवेदन और समझ का उपयोग करके उपयोग किए जाते हैं।
- मूल्यांकन और विश्लेषण का उपयोग करके गद्यांश और उसके बिंदुओं को समाप्त करना।
- समझ और स्मरण का उपयोग करके विवरण प्राप्त करना और उन्हें याद रखना।
- मूल्यांकन की अवधारणा का उपयोग करके लेखक के स्वर को समझना।
- मूल्यांकन और समझ की अवधारणा का उपयोग करते हुए गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दें।

Unleash the topper in you

अध्याय – 2 शिक्षार्थियों की विशेषताएं

पिछले वर्ष के प्रश्न

प्रश्न1: विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण वातावरण में शिक्षक (2022)

(A) मानते है कि सभी शिक्षार्थी विशिष्ट है और इसीलिए वे विभिन्न शिक्षण शैली का प्रयोग करते हैं।

(B) संरचना व दिशा प्रदान नहीं करते हैं।

(C) निर्णय करते हैं कि शिक्षार्थी कैसे व क्या सीखेगें।

(D) शिक्षार्थियों की निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुगम नहीं बनाते हैं।

प्रश्न 2: सूची-I के साथ सूची II का मिलान कीजिए (2022)

सूची-I	सूची-II
बाल विकास	लक्षण
(A) गुट	(i) अल्प प्रगाढ़ता, अधिक निर्बंध रूप से संगठित समूह
(B) भीड़	(ii) सभी विश्वासों, भावनाओं और अभिवृत्तियों के साथ स्वयं की सामान्य समझ
(C) पहचान	(iii) वैयक्तिक और व्यवसायिक विकल्पों के लिए बिलंबित प्रतिबद्धता के साथ अन्वेषण
(D) विलंब काल	(iv) अपेक्षाकृत छोटे, मित्रता - आधारित समूह

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(A) (A)-(iii); (B)-(iv); (C)-(i); (D)-(ii)

(B) (A)-(ii); (B)-(iii); (C)-(iv); (D)-(i)

(C) (A)-(i); (B)-(ii); (C)-(iii); (D)-(iv)

(D) (A)-(iv); (B)-(i); (C)-(ii); (D)-(iii)

प्रश्न 3: नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन A और दूसरे को कारण R के रूप में चिह्नित किया गया है - (2023)

अभिकथन (A): शिक्षकों को छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

कारण (R): प्रश्न पूछने से जिज्ञासा पैदा हो सकती है और सीखने के लिए जुनून विकसित हो सकता है।

उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें

(A) दोनों (A) और (R) सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(B) दोनों (A) और (R) सही हैं, लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(C) (A) सही है लेकिन (R) सही नहीं है।

(D) (A) सही नहीं है लेकिन (R) सही है।

प्रश्न 4: नीचे दो कथन दिए गए हैं : (2023)

कथन – I : किशोरावस्था का समय शैशव एवं प्रौढ़ता के मध्य वृद्धि तथा विकास का संक्रमण काल होता है।

कथन - II : किशोरावस्था भावनात्मक स्थायित्व एवं अत्यधिक राहत की कालावधि है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक मे निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(A) कथन। और II दोनों सही हैं।

(B) कथन। और II दोनों गलत हैं।

(C) कथन। सही है, किन्तु कथन॥ गलत है।

(D) कथन। गलत है, किन्तु कथन II सही है।

प्रश्न 5: नीचे दो कथन दिए गए हैं: (2023)

कथन I: शिक्षक-केंद्रित शिक्षण में, शिक्षक पारंपरिक निर्णय लेने की भूमिका छोड़ देता है और इसके बजाय छात्रों की भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक मार्गदर्शक (facilitator) की भूमिका अपनाता है।

कथन II: छात्र-केंद्रित विधि में, शिक्षक छात्रों के दृष्टिकोण से दुनिया को देखने का प्रयास करता है और सहानुभूति भरे संवाद का वातावरण बनाता है।

ऊपर दिए गए कथनों के आधार पर, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(A) दोनों कथन I और कथन II सही हैं।

(B) दोनों कथन I और कथन II गलत हैं।

(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।

(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

प्रश्न: 6 नीचे दो कथन दिए गए हैं: (2023)

कथन I: समस्याओं या प्रश्नों के लिए असामान्य, फिर भी उचित, प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने की क्षमता को अभिसारी सोच के रूप में जाना जाता है।

कथन II: मुख्य रूप से ज्ञान और तर्क पर आधारित प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने की क्षमता को अपसारी सोच के रूप में जाना जाता है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं

(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं

(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है

(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है

प्रश्न: 7 स्मृति में संगठित जानकारी के समूह, जो नई जानकारी की व्याख्या, संग्रह और पुनः स्मरण को प्रभावित करते हैं, को क्या कहा जाता है? (2023)

(A) रचनात्मक प्रक्रिया (Constructive process)

(B) स्कीमा (Schemas)

(C) खंड (Chunks)

(D) सहसंबंध (Association)

प्रश्न: 8 एक अच्छी परीक्षा प्रणाली में निम्नलिखित होना चाहिए: (2023)

(a) किसी बच्चे की रचनात्मकता को पहचानें

(b) किसी बच्चे के व्यक्तित्व को पहचानें

(c) रटने की शिक्षा को प्रोत्साहित करें

(d) नई सोच को प्रोत्साहित करें

नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर चुनिये:

(A) केवल (a), (b) और (d)

(B) केवल (b) एवं (c)

(C) केवल (a), (B) और (C)।

(D) केवल (c) एवं (d)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

प्रश्न: 9 स्व निर्देशित अधिगम (Self-Directed Learning) में *मेटाकॉग्निटिव ज्ञान* में क्या शामिल होता है? (2023)

(a) सन्दर्भात्मक ज्ञान (Contextual Knowledge)

(b) तथ्यात्मक ज्ञान (Factual Knowledge)

(c) प्रक्रियात्मक ज्ञान (Procedural Knowledge)

(d) तकनीकी ज्ञान (Technological Knowledge)

(e) व्यावहारिक ज्ञान (Practical Knowledge)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(A) केवल (a), (d) और (e)

(B) केवल (c) और (d)

(C) केवल (a), (b) और (c)

(D) केवल (b) और (d)

प्रश्न:10 किस शिक्षण शैली में यह शामिल है कि छात्र किस हद तक शिक्षण सामग्री को इस तरह से अपनाते हैं जिससे उन्हें सामग्री के अर्थ को समझने में मदद मिलती है: (2023)

(A) सतही शैलियाँ

(B) आवेगपूर्ण शैलियाँ

(C) गहरी शैलियाँ

(D) चिंतनशील शैलियाँ

प्रश्न: 11 वास्तविकता के अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा दृष्टिकोण यह सुझाव देता है कि केवल अनुभव और इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान ही स्वीकार्य है? (2024)

(A) निर्माणवाद (Constructionism)

(B) नृवंशविज्ञान (Ethnography)

(C) अनुभववाद (Empiricism)

(D) संचालनवाद(Operationalism)

प्रश्न:12 यह जानते हुए कि आपको बीजगणित अपनी बहन की तुलना में अधिक कठिन लगता है, लेकिन आप अभ्यास के साथ इसमें सुधार कर सकते हैं, इसका एक उदाहरण है: (2024)

(A) स्व-नियमन

(B) मेटाकॉग्निशन

(C) आत्म-अनुशासन

(D) स्वचालन

प्रश्न:13 निम्नलिखित में से कौन-सी अप्रत्यक्ष (अचेतन) स्मृति की उप-श्रेणियाँ हैं? (2024)

a. प्राइमिंग (Priming)

b. प्रासंगिक स्मृति (Episodic Memory)

c. शास्त्रीय अनुबंधन प्रभाव (Classical Conditioning Effects)

d. अर्थपूर्ण स्मृति (Semantic Memory)

e. प्रक्रियात्मक स्मृति (Procedural Memory)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(A) केवल b और d

(B) केवल a, b, d और e

(C) केवल a, c और e

(D) a, b, c, d और e

प्रश्न: 14 स्व-विनियमित सीखने के चक्र का सही क्रम पहचानें। (2024)

a. रणनीति और रणनीति बनाना

b. योजनाएँ बनाना

c. लक्ष्य निर्धारित करना

d. सीखने को विनियमित करना

e. कार्य का विश्लेषण करना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(A) d, b, c, a, e

(B) c, d, b, a, e

(C) e, c, b, a, d

(D) a, b, c, d, e

विश्लेषण - यह अध्याय शिक्षार्थियों की विशेषताओं को समझने पर केंद्रित है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में विविध प्रकार के छात्रों को पहचानने के महत्व पर जोर दिया गया है। यह प्रभावी शिक्षण के लिए इन अंतरों को समझने की शिक्षक की जिम्मेदारी पर प्रकाश डालता है। इस अध्याय से सीधे प्रश्न अक्सर परीक्षाओं में आते हैं, जो इसे तैयारी के लिए आवश्यक बनाता है।

- शिक्षार्थी सामाजिक क्षेत्र, सांस्कृतिक आदतों और परिवर्तन को अपनाने के लिए व्यक्ति की इच्छा से प्रभावित होने के लिए बाध्य हैं।
- **संज्ञानात्मक,** शैक्षणिक**, भावनात्मक और सामाजिक** आधार पर जानकारी एकत्र करके पहचाना जा सकता है

विशेषताएं (शिक्षार्थियों के 4 प्रमुख)

1. याददाश्त, मानसिक दबाव, समस्या समाधान आदि से संबंधित।
2. भावनात्मक - मिजाज, आत्म-चेतना आदि को शामिल करें।

3. व्यक्तिगत आयु, लिंग, भाषा, परिपक्वता आदि।
4. सामाजिक-सामाजिक छवि, परस्पर क्रिया आदि |

शिक्षार्थी की विशेषताएँ

शिक्षार्थी की विशेषताएँ हो सकती हैं

- मनोवैज्ञानिक व्यक्तिगत - आयु, लिंग, भाषा, स्थिति, पृष्ठभूमि आदि जैसी जनसांख्यिकीय जानकारी से संबंधित कौशल, विकलांगता आदि।
- शैक्षणिक - शिक्षा से संबंधित जैसे सीखने के लक्ष्य, पूर्व ज्ञान, शिक्षा का प्रकार और स्तर आदि।
- सामाजिक/भावनात्मक समूह में व्यक्ति से संबंधित, जैसे समूह में व्यक्ति का स्थान, सामाजिक क्षमता, आत्म-छवि, मनोदशा आदि।
- संज्ञानात्मक - स्मृति, मानसिक व्यवहार और बौद्धिक कौशल जैसी चीज़ों से संबंधित जो यह निर्धारित करते हैं कि शिक्षार्थी कैसे सोचता है, याद रखता है और मस्तिष्क में समस्याओं का समाधान करता है।
- मानव व्यवहार पर आधारित।
- विचार, भावना, विचार, ज्ञान से संबंधित।
- तत्परता, व्यायाम, प्रभाव की आदत।
- क्रोध और ईर्ष्या का अभाव
- धीमी शुरुआत, क्रमिक विकास।
- **शिक्षार्थी की विशेषताओं की श्रेणियाँ** सामाजिक और व्यक्तिगत गुणवत्ता।
- विकास और विकास।
- सीखने की इच्छा।
- शिक्षार्थी की रुचि और दृष्टिकोण।
- बदलने के लिए आसानी से समायोजन।
- आंतरिक प्रेरणा।
- सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

किशोर शिक्षार्थी के लक्षण

शैक्षिक

- सीखने और जो पढ़ाया जा रहा है, उसमें प्रासंगिकता की मांग करें।
- ठोस विचारों से अमूर्त विचारों की ओर बढ़ना।
- चुनौती और संलग्न होने पर उच्च उपलब्धि।
- निष्क्रिय सीखने के अनुभवों पर सक्रिय पसंद करते हैं।
- सीखने की गतिविधियों के दौरान साथियों के साथ बातचीत करने में रुचि।

भावनात्मक

- **मूड में अचानक और अप्रत्याशित बदलाव।**
- ऊर्जा का स्तर बहुत अधिक होता है और इससे वे बुरी गतिविधि में भी शामिल हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, गेम खेलना और इसी तरह की अन्य गतिविधियाँ, जिनसे उनकी ऊर्जा का उपयोग हो सके। साथ ही स्वतंत्र बनने की इच्छा और अपनी वयस्क पहचान और स्वीकार्यता की खोज करना।

सामाजिक

- बड़े छात्रों, माता-पिता अन्य वयस्कों आदि व्यवहार का अनुकरण करना।

जैसे हम अपने आसपास के लोगों के व्यवहार को नकल करने की कोशिश करते हैं।

- इस आयु में एक सामाजिक स्थिति (छवि) बनाने की कोशिश करते हैं।किशोर शिक्षार्थी कुछ बड़े या मानसिकता वाले लोगों के साथ समूह बनाना पसंद करते हैं।
- किशोर हमेशा मानसिक स्थिति परीक्षण से भयभीत महसूस करते हैं और हमेशा सोचते हैं कि आगे क्या होगा।
    - **गैड्स** को जोड़ना और लोकप्रिय संस्कृति में रुचि रखना।

जैसे इस उम्र में हमें बॉलीवुड या हॉलीवुड का प्रभाव महसूस होता है।

भावनात्मक

- **आत्म-जागरूकता और** और व्यक्तिगत आलोचना के प्रति संवेदनशील हो।
- शारीरिक विकास और परिपक्वता के बारे में चिंता।
- विश्वास है कि उनकी व्यक्तिगत समस्याएं, भावनाएं और अनुभव स्वयं के लिए अद्वितीय हैं।
- शर्मिंदगी और अस्वीकृति का उपहास करना।
- गहन जिज्ञासा और लंबी अवधि के लिए बौद्धिक खोज की एक विस्तृत श्रृंखला। (संज्ञानात्मक)
- हमें किशोर शिक्षार्थियों को नियंत्रित और निर्देशित करना है और यह परिवार और शिक्षकों द्वारा किया जाता है।

संज्ञानात्मक

- नैतिक मुद्दों की जटिलता की समझ उदाहरण के लिए एक बहुत प्रसिद्ध नैतिक मुद्दा यह है कि हम कहते हैं "यदि एक बिल्ली आपके रास्ते से गुजरती है, तो आपको थोड़ी देर रुकना चाहिए"। प्रत्येक किशोर शिक्षार्थी ऐसी बातों पर ध्यान केंद्रित करता है और सवाल करना शुरू कर देता है।
- लोकतंत्र में रुचि है।
- समाज, परिवार आदि में परिवर्तन की गति से अधीर। ये चीजों को तेजी से बदलना चाहते हैं और उनके अनुसार इन सभी परिवर्तनों को स्वीकार करना बहुत आसान है।
- आत्म-चिंतनशील होने की क्षमता का अर्थ है कि वे सब कुछ लागू करते हैं।

वयस्क शिक्षार्थियों की विशेषताएं

शैक्षिक

- वे जो सीख रहे हैं उसके बड़े चित्र दृश्य की आवश्यकता है। उन्हें यह जानने की जरूरत है कि छोटे हिस्से बड़े परिदृश्य में कैसे फिट होते हैं।
  - वयस्क शिक्षार्थी जानते हैं कि अगर हम आज से ही तैयारी करना शुरू कर दें तो बड़ी चीजें कैसे प्राप्त की जा सकती हैं।
- परिणामोन्मुखी हैं। सीखने से उन्हें क्या मिलेगा, इसके लिए उनकी विशिष्ट अपेक्षाएं हैं और यदि वे उस लक्ष्य को जानते हैं तो निश्चित रूप से वे हार मान लेंगे।
- नहीं होगा तो वो आसानी से हार मान लेंगे देंगे ।
- व्याख्यान सुनने के बजाय अभ्यास को प्राथमिकता दें।

संज्ञानात्मक

- असफलता में अपनी सफलता की जिम्मेदारी खुद लें।
- पूर्व-स्व-प्रेरित और कमाने के लिए तैयार और बौद्धिक रूप से अधिक स्थिर हैं।
- स्वायत्त और स्व निर्देशित हैं ।
- नए ज्ञान और कौशल को तुरंत लागू करना चाहते हैं।

सामाजिक

- एक सीखने वाले समुदाय को प्राथमिकता दें जिसके साथ वे बातचीत कर सकें और प्रश्नों और मुद्दों पर चर्चा कर सकें।
- कई शिक्षार्थियों के पारिवारिक मुद्दे और जिम्मेदारियां हैं, यह उनके सीखने को प्रभावित करता है।
- सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहते हैं।
- वयस्क शिक्षार्थियों को नियंत्रित करने और निर्देशित करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

भावनात्मक

- नियंत्रण और स्व-निर्देशन (Self-Direction) की भावना को प्राथमिकता देते हैं।
- अपने सीखने के वातावरण में विकल्प और स्वतंत्रता पसंद करते हैं।
- मनोक्रियात्मक कौशल को धीरे-धीरे हासिल कर सकते हैं और छोटे अक्षरों या चित्रों को पढ़ने में कठिनाई हो सकती है।
- वयस्क किसी विषय को याद कर सकते हैं, नौकरी की ज़िम्मेदारी में जबरन बदलाव के बारे में चिंता या गुस्सा महसूस कर सकते हैं।
- कार्यस्थल कौशल में दक्षता हासिल करना उन्हें आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ाने में मदद करता है।
- परिवर्तन के लिए समायोजन - आसान नहीं।

व्यक्तिगत भिन्नताएँ

- विकास की दर सभी व्यक्तियों के लिए समान नहीं होती है।
- सीखना सबसे प्रभावी होता है जब शिक्षार्थी की भाषा, संस्कृति, सामाजिक व्यवहार में अंतर को ध्यान में रखा जाता है।
- व्यक्तिगत भिन्नताएँ व्यक्तियों के बीच वृद्धि और विकास की भिन्न दर को दर्शाती हैं।
- **व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रमुख कारक**
  - [आनुवंशिकता और पर्यावरण] इन दो कारकों की मदद से, हमारे लिए व्यक्तिगत अंतरों को खोजना आसान हो जाता है।
- **आनुवंशिकता के प्रकार**
  - शारीरिक स्थिति - प्रतिक्रिया समय क्रिया की गति आदि के बारे में बताती है।(जन्म से विकलांग (बहरा, कोई पैर/हाथ नहीं आदि)

योग्यता और विशेष प्रतिभा

संगीत, अभिनय, विज्ञान आदि में प्रतिभा।

- लिंग, जैसे पुरुष आक्रामक होते हैं, आदि। महिलाएं निष्क्रिय, संवेदनशील आदि होती हैं।
- आयु
- स्वभाव

उदा . 1 A हर स्थिति में भावनात्मक है और Bनहीं है इसलिए यह सीखने की गति और अन्य कारकों में अंतर पैदा कर सकता है।

उदाहरण - 2 स्थिरता + परिपक्वता + नकारात्मक और सकारात्मक मानसिकता यानी नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति सामना नहीं कर पाएगा लेकिन सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति तेजी से सीखता है। कहीं न कहीं यह वंशानुक्रम से जुड़ा है।

  - अंतर्मुखता
  - उदा. शांत व्यक्तित्व
  - बहिर्मुखता
  - उदा. कर्कश, बातूनी व्यक्ति।
- अंतर्मुखी शांति से काम करना पसंद करते हैं, शांत और लोगों के कम संपर्क के साथ।
- बहिर्मुखता बातचीत का आनंद लेते हैं और हमेशा सम्मिलित काम की तरह एक समूह का नेतृत्व करना चाहते हैं।
  1. पुरुषार्थ (प्रयास) करने की क्षमता - यह दो व्यक्तियों में भिन्न हो सकती है।

     जैसे व्यक्ति A ड्राइविंग सीखने का प्रयास करता है लेकिन व्यक्ति B नहीं। इसलिए वहां के परिणाम अलग होंगे।
  2. अपराधी प्रवृत्ति - यदि किसी व्यक्ति की आपराधिक पृष्ठभूमि हैतो आपको यकीन है कि A का दिमाग हमेशा अलग रास्ते पर काम करता है।

     इसलिए A का सीखना धीमा होगा।

पर्यावरण प्रकार

1. पारिवारिक पृष्ठभूमि।
2. सामुदायिक पृष्ठभूमि।

3. स्कूल पृष्ठभूमि।
    - शिक्षक को व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।
    - छात्रों से एकरूपता की उम्मीद करना गलत है।
    - सभी के पास समान स्तर की क्षमताएं नहीं होती हैं।

(सीटीएम)

- किसी विशेष विधि या निर्देश से सभी छात्र लाभान्वित नहीं हो सकते हैं इसलिए एक शिक्षक को अपने शिक्षण के तरीकों में बदलाव पर ध्यान देना चाहिए ताकि किसी छात्र को नुकसान न हो।
- एक शिक्षक को प्रत्येक बच्चे के विकास को अधिकतम करने के लिए काम करना चाहिए।

स्मृति

स्मृति से तात्पर्य उस क्षमता से है, जिसके द्वारा व्यक्ति जानकारी को संग्रहित (retain) करता है और आवश्यकता पड़ने पर उसे पुनः प्राप्त (recall) करता है। इसे तीन चरणों में बाँटा गया है (i) एन्कोडिंग, (ii) भंडारण, तथा (iii) पुनर्प्राप्ति।

- निहित स्मृति: एक गैर घोषणात्मक स्मृति
    - दीर्घकालीन स्मृति
    - सचेत जागरूकता के बिना अचेतन रूप से निर्मित और पुनः प्राप्त किया गया

अन्तर्निहित (अचेतन) स्मृति के उपविभाजन

1. शास्त्रीय अनुबंधन प्रभाव
2. भड़काना
3. प्रक्रियात्मक स्मृति

- जिस जानकारी को लोग जानबूझकर याद रखने या याद करने का प्रयास नहीं करते हैं वह अंतर्निहित स्मृति में संग्रहीत हो जाती है, जिसे कभी-कभी अचेतन या स्वचालित स्मृति भी कहा जाता है।
- इस प्रकार की स्मृति अचेतन और अनजाने दोनों होती है। अन्तर्निहित स्मृतियाँ अचेतन होती हैं और मौखिक रूप से व्यक्त नहीं की जातीं। यह प्रक्रियात्मक है और चरण-दर-चरण प्रक्रियाओं पर केंद्रित है जिन्हें किसी कार्य को पूरा करने के लिए निष्पादित किया जाना चाहिए|
- प्रक्रियात्मक स्मृतियाँ, जैसे कि बेसबॉल बैट घुमाना या टोस्ट बनाना जैसे किसी विशिष्ट कार्य को कैसे करना है, एक प्रकार की अंतर्निहित स्मृति हैं।
- इसमें याद किए जाने वाले चरण शामिल नहीं होते।
- इसे स्वचालित रूप से पुनः प्राप्त किया जाता है।
- यह हमारे व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।
- मस्तिष्क की चोटों से पीड़ित कई रोगियों में इस तरह की स्मृति पाई गई।

- **स्पष्ट स्मृति: एक घोषणात्मक स्मृति**
    - यह एक दीर्घकालिक स्मृति है जिसमें सचेत रूप से बनाई गई जागरूकता और तथ्यों, घटनाओं और ज्ञान को जानबूझकर याद करना शामिल है।
    - अगर हम जानबूझकर कुछ याद करने या सीखने की कोशिश करते हैं, तो यह जानकारी हमारी स्पष्ट स्मृति में संग्रहीत या कैप्चर हो जाती है।
    - कोई भी हर दिन इन स्मृतियों का उपयोग कर सकता है, परीक्षण के लिए जानकारी याद रखने से लेकर डॉक्टर की नियुक्ति की तारीख और समय याद करने तक। इसे घोषणात्मक स्मृति के रूप में भी जाना जाता है, इसे जानबूझकर पहचाना और समझाया जाता है।
    - यह पहले हुई घटनाओं के सचेत स्मरण को संदर्भित करता है।
    - यह याद और पहचान का पर्याय है।
    - यह स्पष्ट स्मृति का एक चेतना पहलू है।
- प्रासंगिक स्मृति **:**
    - एक प्रकार की स्पष्ट स्मृति।
    - किसी के जीवन में विशिष्ट घटनाओं, अनुभवों या प्रकरणों का स्मरण।
    - इसमें समय, स्थान, भावनाएँ, लोग शामिल होते हैं।
    - यह हमें पिछली घटनाओं को याद करने और उन्हें सचेत रूप से याद करने की अनुमति देता है।
    - ये विशेष घटनाओं की दीर्घकालिक यादें हैं, जैसे कि आपने कल क्या किया या आपका हाई स्कूल स्नातक
    - इसमें व्यक्तियों की जीवनी संबंधी जानकारी शामिल होती है।
    - इस प्रकार की यादें हमारे व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों से संबंधित होती हैं।
    - किसी के अपने अनुभव प्रासंगिक स्मृति का हिस्सा होते हैं।
- सार्थक स्मृति यह तथ्यों, अवधारणाओं, नामों और अन्य सामान्य ज्ञान की स्मृति है।
- प्रतिगामी स्मृति
    - नई जानकारी पहले से सीखी गई जानकारी को याद करने की क्षमता में बाधा डालती है।
    - यह हमेशा अनजाने में बनता है और बिना किसी सचेत जागरूकता के पुनः प्राप्त होता है
- ईडेटिक मेमोरी:
    - दृश्य छवियों को याद करें
    - फोटोग्राफिक मेमोरी
- प्रक्रियात्मक मेमोरी
    - यह दीर्घकालिक मेमोरी है।
    - यह विभिन्न कार्यों और कौशल को पूरा करने के लिए प्रक्रियाओं से संबंधित यादों को संदर्भित करता है।
    - उदाहरण के लिए, साइकिल कैसे चलाएं, चाय कैसे बनाएं, आदि।
    - प्रक्रियात्मक मेमोरी की सामग्री को आसानी से वर्णित नहीं किया जा सकता है।
    - मोटर कौशल प्रक्रियात्मक मेमोरी से संबंधित हैं।